विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2022

यूपीएससी परीक्षा के किस पाठ्यक्रम से संबंधित	
प्रारम्भिक परीक्षा	**मुख्य परीक्षा**
प्रथम प्रश्न पत्र : अंतर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएँ	**द्वितीय और तृतीय प्रश्न पत्र :** महत्वपूर्ण रिपोर्ट, अर्थव्यवस्था

प्रसंग

- हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ), अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास कोष (आईएफएडी), यूनिसेफ, विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2022' रिपोर्ट प्रकाशित की गई है।
- प्रतिवेदन में, भारत के संदर्भ में उल्लिखित है कि यहाँ कुपोषित लोगों की संख्या 2019–21 में घटकर 224.3 मिलियन हो गई, जो 2004-06 में 247.8 मिलियन थी।

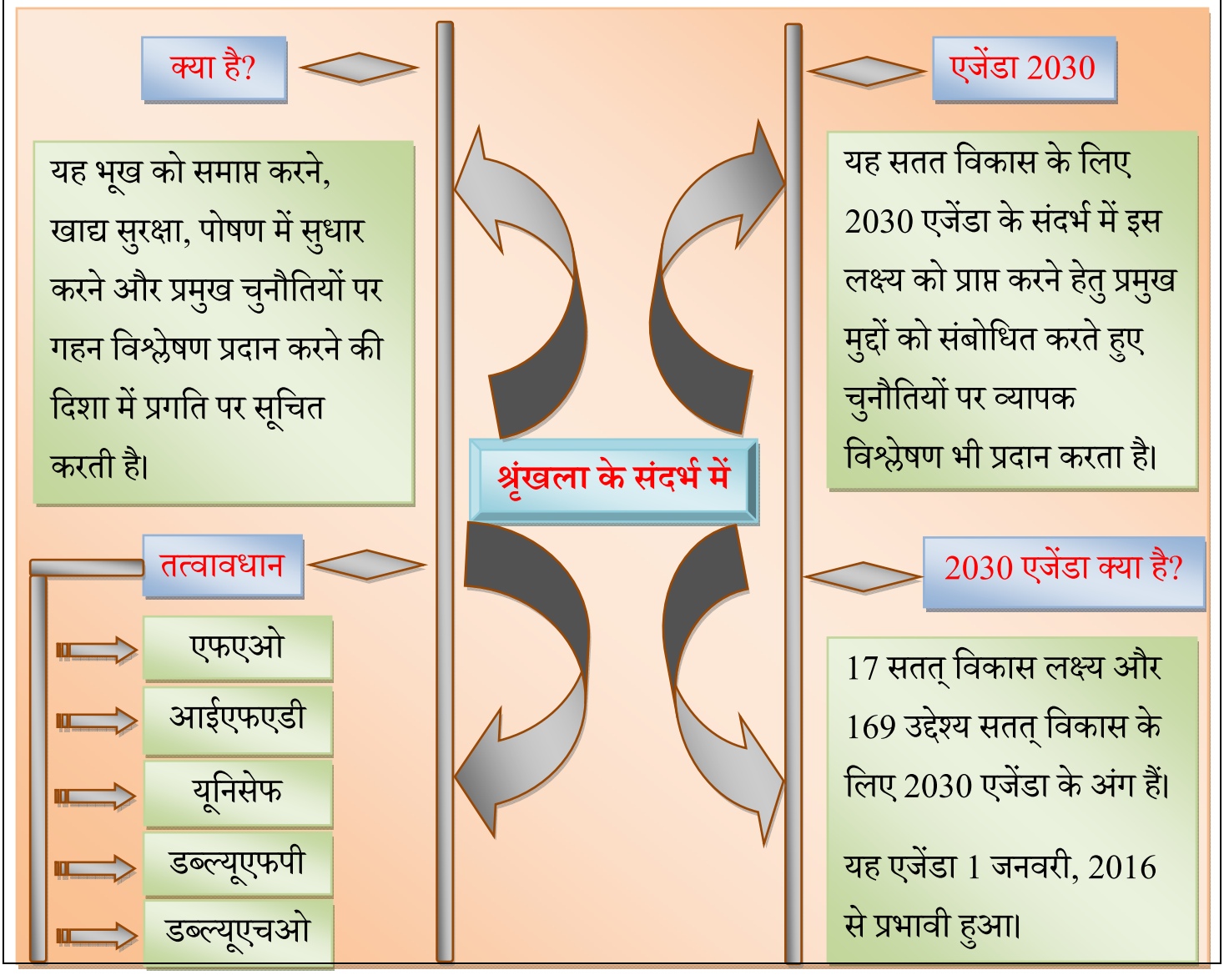

विश्व संदर्भ में निष्कर्ष

- वैश्विक स्तर पर भूख से प्रभावित लोग
    - वैश्विक स्तर पर भूख से प्रभावित लोगों की संख्या 2021 में बढ़कर 828 मिलियन हो गई है, जिसमें 2020 से लगभग 46 मिलियन और कोविड-19 महामारी के प्रकोप के बाद से 150 मिलियन की वृद्धि दृष्टिगोचर हुई।
    - 2015 के बाद से अपेक्षाकृत अपरिवर्तित रहने के बाद, भूख से प्रभावित लोगों के अनुपात में 2020 में बढ़ोतरी दृष्टिगत हुई है और यह 2021 में दुनिया की आबादी के 9.8 प्रतिशत तक बढ़ गया है। यह 2019 में 8 फीसदी और 2020 में 9.3 फीसदी की तुलना में है।
    - रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में विश्व स्तर पर भूख बढ़ी है। लगभग 2.3 बिलियन लोगों को खाने के लिए पर्याप्त मात्रा में मध्यम या गंभीर कठिनाई का सामना करना पड़ा है। विदित है कि यह स्थिति यूक्रेन युद्ध से पहले की थी, जिसने अनाज, उर्वरक और ऊर्जा की लागत में वृद्धि दृष्टिगोचर हुई।
    - यह विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2021 के आंकड़ों के आधार पर एक गंभीर स्थिति के साथ भूख, खाद्य असुरक्षा और कुपोषण को समाप्त करने के वैश्विक प्रयासों में सार्थक प्रयासों की कमी का उल्लेख करती है।
- खाद्य असुरक्षा
    - विश्व स्तर पर लगभग 924 मिलियन लोगों (वैश्विक जनसंख्या का 11.7 प्रतिशत) को गंभीर स्तर पर खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा, जिसमें दो वर्षों में 207 मिलियन की वृद्धि हुई।
- खाद्य असुरक्षा में लिंग अंतर
    - खाद्य असुरक्षा में लिंग अंतर 2021 में बढ़ा है।
    - विश्व में 31.9 प्रतिशत महिलाएं, 27.6 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में मध्यम या गंभीर रूप से खाद्य असुरक्षित थीं।
    - यह 2020 में 3 प्रतिशत अंकों की तुलना में 4 प्रतिशत से अधिक के अंतर को स्पष्ट करता है।
- स्वस्थ आहार

- वर्ष 2020 में लगभग 3.1 बिलियन लोग स्वस्थ आहार को वहन करने में अक्षम थे, इसमें वर्ष 2019 की तुलना में 112 मिलियन की वृद्धि हुई है।
- यह कोविड-19 महामारी के आर्थिक प्रभावों और इसे रोकने के लिए किए गए उपायों से उपजी उपभोक्ता खाद्य कीमतों में मुद्रास्फीति के प्रभावों को दर्शाता है।

- सब्सिडी
  - रिपोर्ट में उल्लिखित है कि कम आय वाले देशों और मध्यम आय वाले देशों में उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सब्सिडी सामान्यतः सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों के अंतर्गत इन-काइंड अथवा धन हस्तांतरण के रूप में प्रदान की जा रही है।
  - उदाहरण के लिए, भारत में अनाज के लिए लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली और इंडोनेशिया में चावल के इलेक्ट्रॉनिक वाउचर पर आधारित खाद्य सहायता कार्यक्रम (BPNT) के तहत अंतिम उपभोक्ताओं को पर्याप्त सब्सिडी प्रदान की जा रही है।
- यूक्रेन युद्ध और आपूर्ति श्रृंखला
  - प्रतिवेदन में चेतावनी दी गई है कि यूक्रेन में जारी युद्ध आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर रहा है और अनाज, उर्वरक और ऊर्जा की कीमतों को अधिक प्रभावित कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप 2022 की पहली छमाही में इनकी कीमतों में वृद्धि हुई है।
  - चरम जलवायु घटनाएं भी आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर रही हैं, विशेषकर कम आय वाले देशों में।
  - यूक्रेन और रूस ने मिलकर दुनिया के गेहूं और जौ का लगभग एक तिहाई और सूरजमुखी के आधे तेल का उत्पादन किया, जबकि रूस और उसके सहयोगी बेलारूस उर्वरक के एक प्रमुख घटक पोटाश के दुनिया के द्वितीय और तृतीय उत्पादक देश हैं।
- कुपोषण
  - पांच वर्ष से कम आयु के अनुमानित 45 मिलियन बच्चे कुपोषण के सबसे घातक रूप से पीड़ित थे, जिससे बच्चों की मृत्यु का जोखिम 12 गुना तक बढ़ जाता है।
  - इसके अलावा, वर्ष से कम आयु के 149 मिलियन बच्चों में आहार में आवश्यक पोषक तत्वों की कमी के कारण विकास बाधित हुआ, जबकि 39 मिलियन बच्चे अधिक वजन वाले थे।

भारतीय परिदृश्य

- भारत में अल्पपोषित आबादी
    - संयुक्त राष्ट्र के निर्देशन में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, भारत में गत 15 वर्षों के दौरान अल्पपोषित लोगों की संख्या में कमी आई है और यह संख्या घटकर 2019-2021 के बीच 22 करोड़ 43 लाख रह गई है।
    - भारत, जो दुनिया की दूसरी सबसे अधिक आबादी का प्रतिनिधित्व करता है, में मोटापे से प्रभावित वयस्कों और अनीमिया (खून की कमी) से ग्रसित महिलाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है।
    - भारत में 2004-06 के बीच कुल जनसंख्या का अल्पपोषित हिस्सा 21.6 प्रतिशत था जो घटकर 2019-21 में 16.3 प्रतिशत रह गया।
- पांच वर्ष की आयु के बच्चे
    - पांच वर्ष से कम आयु के जिन बच्चों का विकास बाधित हुआ है, उनकी संख्या 2012 में पांच करोड़ 23 लाख थी, जो 2020 में घटकर तीन करोड़ 61 लाख रह गई।
    - मोटापे से पीड़ित पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की संख्या 2012 में तीस लाख थी, जो घटकर 2020 में 22 लाख रह गई।
    - देश में मोटापे से पीड़ित लोगों की संख्या 2012 में दो करोड़ 52 लाख थी, जो 2016 में बढ़कर तीन करोड़ 43 लाख हो गई।
- अनीमिया
    - अनीमिया से पीड़ित 15 से 49 वर्ष की महिलाओं की संख्या 2012 में 17 करोड़ 15 लाख थी, जो 2019 में बढ़कर 18 करोड़ 73 लाख हो गई।
- वयस्क आबादी
    - 2012 में देश की वयस्क जनसंख्या में से 3.1 प्रतिशत लोग मोटापे से पीड़ित थे और यह आंकड़ा 2016 में बढ़कर 3.9 प्रतिशत हो गया।
    - भारत में स्वस्थ आहार व्यय वहन करने में असमर्थ लोगों की संख्या 2020 में 97 करोड़ 33 लाख या लगभग 70.5 प्रतिशत तक पहुंच गई, जो 2019 में 94 करोड़ 86 लाख (69.4 प्रतिशत) से ऊपर थी।
    - 2017 में, भारत में लगभग एक अरब लोग स्वस्थ आहार लेने में असमर्थ थे और 2018 में यह संख्या घटकर 96 करोड़ 66 लाख हो गई।

- सब्सिडी
  - भारत अंतिम उपभोक्ताओं को पर्याप्त खाद्य सब्सिडी प्रदान करता है
  - रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत अंतिम उपभोक्ताओं को अनाज के लिए पर्याप्त सब्सिडी प्रदान करता है और इसके लिए भारत की प्रशंसा की गई।
  - रिपोर्ट में कहा गया है कि (निम्न-मध्यम आय वाले देशों) एलएमआईसी का सबसे प्रमुख उदाहरण भारत है, जहां खाद्य और कृषि नीति ने ऐतिहासिक रूप से उपभोक्ताओं की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया है।
  - विदित है कि भारत ऐसा सस्ती खाद्य कीमतों को सुनिश्चित करके संभव हुआ है।

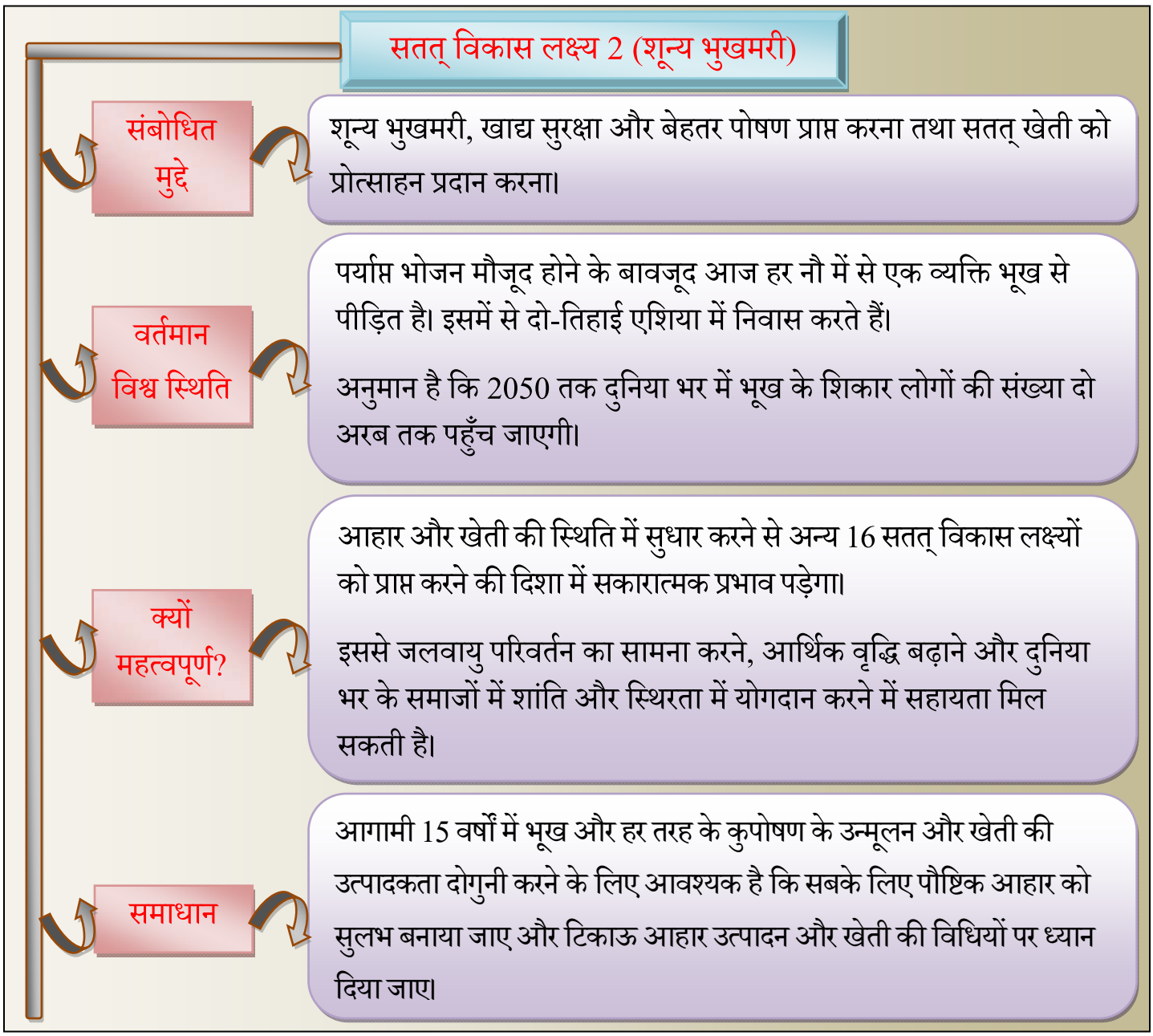

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस